

स्थान पर मशीनों का प्रयोग, कार्यों के लिए मशीनों का उपयोग।

यंद पुं. (तत्.) इंद्र, राजा, स्वामी, जैसे गयंद (गर्जेन्द्र)।

य पुं. (तत्.) 1. यश, कीर्ति, सम्मान 2. योग 3. यान, गाड़ी 4. यम 5. संयम 6. जौ, यव 7. त्याग 8. सारथि 9. प्रकाश 10. (छंद) यगण देवनागरी वर्णमाला का छब्बीसवाँ व्यंजन वर्ण।

यक-बयक वि. (फा.) एकाएक, अचानक, सहसा, अकस्मात्, अनायास।

यकसाँ वि. (फा.) 1. एक समान, बराबर, सदृश, चौरस, समतल।

यकायक वि. (फा.) अचानक, अकस्मात्, सहसा, तुरंत, शीघ्र, फौरन।

यकीन पुं. (अर.) विश्वास, भरोसा, एतिबार, श्रद्धा, असंदेह।

यकीनन वि. (अर.) संभवतः, अवश्यमेव, यकीनी, निःसंदेह, बिला शुबहा, विश्वासपूर्वक।

यकृत पुं. (तत्.) चिकि.वि. शरीर की सबसे बड़ी गहरे लाल रंग की ग्रंथि जो पेट में ऊपर दाहिनी ओर डायफ्राम के नीचे स्थित होती है, इससे भोजन के लिए पाचक रस प्राप्त होता है, यकृत में प्रोटीनों, वसाओं और कार्बोहाइड्रेटों का निर्माण, विघटन और संग्रह होता है। इसी में पित्त का साव, हार्मोन्स का विघटन और अनेक विटामिनो (ए.डी.ई.के) का संग्रह होता है, इसका वजन लगभग 1500 ग्राम होता है, इसका पित्त शर्करा को ग्लाइकोजन में परिवर्तित करता है।

यकृतिन पुं. (तत्.) (चिकि.वि.) 1. बहु-शर्करीय गंधक अम्ल ईस्टर जो यकृत, फेफड़ों और अन्य ऊतकों में पाया जाता है, यह फाइब्रिन का निर्माण कर रक्त को जल्दी जमने, थक्का बनने से बचाता है, हृदय, रक्तवाहिनी आदि की शल्य चिकित्सा में उपयोगी कार्य करता है।

यकतांगुलि स्त्री. (तत्.) जुड़ी हुई हाथ या पैर की उँगलियाँ, उँगलियों के जुड़े होने की स्थिति, मांस की झिल्ली से जुड़ी सभी उँगलियाँ, यह

विशेषकर जलीय जीवों में होती हैं, जैसे- सील, मेंढक वालरस आदि।

यक्ष पुं. (तत्.) एक देवता जिन्हें कुबेर के धनागार का रक्षक माना जाता है।

यक्षकर्दम पुं. (तत्.) उबटन रूपी शृंगार का एक प्रसाधन, जिसका लेपन शरीर के विभिन्न अंगों पर किया जाता है।

यक्षगान पुं. (तत्.) यक्षों के द्वारा किया जाने वाला गान।

यक्षपति पुं. (तत्.) यक्ष के स्वामी, कुबेर।

यक्ष्मा पुं. (तत्.) एक शारीरिक रोग, जो फेफड़ों में लग जाता है, क्षय रोग, तपेदिक, टीबी।

यजन पुं. (देश.) यज्ञ का कार्य, यज्ञ करना।

यजमान पुं. (तत्.) पुरोहितों से यज्ञ आदि अनुष्ठान कराने वाला व्यक्ति, इस कार्य के लिए यजमान दक्षिणा भी देता है।

यजुर्वेद पुं. (तत्.) व्यास ऋषि द्वारा संपदित वेदों की संख्या चार है ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद, यजुर्वेद संहिता के दो प्रकार हैं- शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद, कालक्रम की दृष्टि से यजुर्वेद, ऋग्वेद के पश्चात् रखा जाता है।

यजुष्पति पुं. (तत्.) विष्णु भगवान का एक पर्याय, नारायण।

यज्ञ पुं. (तत्.) 1. यज्ञ का सरलतम रूप है अग्निहोत्र अथवा हवन, जिसमें विभिन्न प्रकार की औषधिमूलक जड़ी-बूटियों की आहुति मंत्रोच्चारण के साथ अग्नि में डाली जाती है 2. हवन, दान आदि युक्त धार्मिक कार्य 3. कोई बड़ा धार्मिक कृत्य जैसे- धनुषयज्ञ, दान यज्ञ आदि।

यज्ञपति पुं. (तत्.) 1. विष्णु का पर्याय यजुष्पति, नारायण 2. यजमान, यज्ञ करने वाला।

यज्ञपत्नी स्त्री. (तत्.) यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा।

यज्ञपशु पुं. (तत्.) अग्निहोत्र में बलि चढ़ाए जाने योग्य पशु।